एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 04, अंक: 02 (मार्च-अप्रैल, 2024)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

मिट्टी का स्वास्थ्य बनाये रखने में मृदा जाँच की उपयोगिता

(*शशि शेखर[1] एवं डॉ. जय प्रकाश कन्नौजिया[2])
[1]शस्य विज्ञान विभाग, जे.एस. विश्वविद्यालय, शिकोहाबाद
[2]कृषि विभाग, मेरठ इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलोजी, मेरठ
*संवादी लेखक का ईमेल पता: shekhar.shashi276@gmail.com

मृदा का स्वास्थ्य बनाये रखने के लिए मृदा स्वास्थय की जाँच करना अति आवश्यक है। इससे उर्वरकों की मात्रा के प्रयोग के बारे में जानकारी प्राप्त होती है जिससे मृदा के लिए आवश्यक पोषक तत्वों की पूर्ति क्षमता का प्रयोगशाला में जाँचकर निर्धारण किया जा सके कि मृदा मे कौन-कौन से पोषक तत्वों की कमी है और मृदा में हुई कमी को दूर करके ताकि लम्बी अवधि के लिये मृदा स्वास्थय को बनाये रखा जा सके और साथ ही साथ प्रति इकाई क्षेत्रफल में उत्पादन बढ़ा कर किसानों के आर्थिक लाभ में भी वृद्दि हो सके । वर्तमान समय में रासायनिक उर्वरकों के अंधाधुंध प्रयोग से हमारी मृदा के स्वास्थय में या मृदा की गुणवत्ता में निरंन्तर गिरावट आ रही है जिसके लिए निम्नलिखित संम्भावित कारक उत्तरदायी है-

1. उर्वरको का असंतुलित प्रयोग करना।
2. फसलों के सघन उत्तपादन से मिट्टी में पोषक तत्वों की लगातार कमी हो रही है।
3. उचित फसल चक्र का प्रयोग न करना तथा फसल चक्र में दलहनी फसलों का समावेश नही करना या कम करना।
4. मृदा में पोषक तत्वों का उपलब्धता के बारे में जानकारी न होना।
5. जैविक खाद का कम प्रयोग करना या प्रयोग न करना।
6. मृदा मे कार्बनिक पदार्थ की मात्रा में लगातार गिरावट होना।

मृदा स्वास्थ्य जाँच हेतु मृदा का नमुना कैसे ले?

1. सबसे पहले जिस खेत में मृदा नमुना लेना है उसमें 8-10 स्थानों में निशान लगा लें।
2. चुनी हुई जगह की ऊपरी सतह पर घास या कोई कूड़ा करकट हो तो उसे हटा दें।
3. अब खुरपी या फावड़े की सहायता से चुने हुये स्थानो पर 6 इंच × 4 इंच के गडढे खोद लें।
4. खुरपी से उन गडढें की दीवार से लगभग 2.5 से0मी0 ऊपर से नीचे की परत उतार कर बाल्टी या बर्तन में डालकर अच्छी तरह से मिला लें।
5. अब इन नमूनो को किसी साफ फर्श पर ढेरी बना लें।
6. हाथ से इस ढेर को चार बराबर भागों में बाँट लें।
7. आमने सामने के दो भाग को फेंक दे एवं दो भागों को अच्छी तरह से मिलाये। पुनः ढेर बनाकर उक्त प्रक्रिया तब तक दोहराये जब तक मिट्टी लगभग आधा किलोग्राम न रह जाये।
8. यदि मिट्टी गीली हो तो उसे छाया में सुखा ले और साफ थैली में भर दें।
9. अब दो लेबिल ले उन पर कृषक का नाम, ग्राम का नाम, विकास खण्ड, तहसील तथा जनपद का नाम, मो0 न0, नमूना लेने का दिनाँक, खेत की पहचान, सिंचाई के उपलब्ध स्त्रोत, फसलों का ब्यौरा

लिखकर एक लेबिल थैली के अंन्दर एवं एक थैली के ऊपर बाँधकर और एकत्रित मृदा नमूना को अच्छे से पैक करके यथाशीघ्र प्रयोगशाला में जाँच के लिए भेज दें।

मृदा नमूना लेते समय ध्यान देने योग्य बाते:

1. मृदा का नमूना पेड़ो, मेड़ो, खाद का ढेर और रास्तो के आस-पास से नही लेना चाहिए।
2. मृदा का नमूना लेते समय औजारो का उपयोग करना चाहिए जैसे खुरपी फावड़ा आदि।
3. मृदा नमूनों की थैली साफ सुथरी होनी चाहिए ऐसी थैलियो की प्रयोग न करें जो खाद या रसायनो के उपयोग मे लायी गई हो।
4. खड़ी फसल में मृदा का नमूना नही लेना चाहिए अतः खरीफ रबी जायद फसलों की बुआई से पहले मृदा नमूना लेना चाहिए।
5. मृदा का नमूना इस तरह लेना चाहिए कि वह पूरे खेत का प्रतिनिधित्व करे।
6. नमूना बुआई के लगभग एक माह पहले मृदा जाँच प्रयोगशाला में भेज देना चाहिए जिससे समय पर मृदा जाँच रिपोर्ट मिल सके जिसके अनुसार उर्वरको एवं सुधारको का उपयोग किया जा सके।

मृदा स्वास्थ्य को कैसे बनाये रखे?

1. कार्बनिक खादो द्वारा
2. हरी खाद द्वारा
3. फसल अवशेष को मृदा में सड़ाकर
4. विभिन्न प्रकार के जैव उर्वरको का प्रयोग से
5. उचित फसल चक्र उपनाकर
6. रसायनिक उर्वरको का सन्तुलित मात्रा में उपयोग करके।